॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

बृहत्साम

विषय-सूची

बृहत्साम.....3

बृहत्साम

सामवेद । अध्याय ३

सामवेद में अनेक मनोहारी गीत हैं, जिन्हें 'साम' कहा जाता है। इनका गायन एक विशिष्ट परम्परागत वैदिक पद्धति से किया जाता है, जो अत्यन्त मनोहारी होता है। गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने स्वयं को सामों में बृहत्साम कहा है-'बृहत्साम तथा साम्नाम्' (गीता १०/३५)। सामवेद में सबसे श्रेष्ठ होने के कारण इस 'बृहत्साम' को अपनी विभूति बताया है। यह सामवेद के उत्तरार्चिक में अध्याय तीन के अन्तर्गत है। इस सामके देवता इन्द्र, द्रष्टा-ऋषि शयु बार्हस्पत्य तथा छन्द बार्हत-प्रगाथ (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) है ।

त्वमिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥१॥

हे इन्द्ररूप परमेश्वर ! हम स्तोता अन्नवृद्धि के लिये आपका ही आह्वान करते हैं। विवेकशील मनुष्य भी शत्रुओं की शत्रुता से आक्रान्त होने पर समस्त प्रयत्न करके भी हारने लगते हैं, तब आपको ही पुकारते हैं ॥१॥

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महस्तवानो अद्रिवः।
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे॥२॥

हे अतुल पराक्रमी, हाथ में विचित्र वज्र धारण करने वाले, स्वयं के तेज से प्रकाशित इन्द्ररूप परमेश्वर! आप हमें गोधन, रथ के योग्य कुशल अश्व, अन्न तथा ऐश्वर्य प्रदान करें ॥२॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।